Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13. D. 48 (a) Hindi RayN 1/1

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

HI.

Lakshmī Sarasvati sambada

Pt. I.

Lechhmen Sursati Sumbad

लक्ष्मीसरस्वतीसम्बाद

प्रथम भाग

لچھمی سرستی سمباد

پہلا حصہ

जिसमें

प्रश्नोत्तर की रीति पर एतद्देशीय कन्या औरस्त्रियोंकी
शिक्षा के निमित्त मनोहर कथा द्वारा नीतिशिक्षा
वर्णित है

जिसको

स्त्रियों के शिक्षा द्वारा सर्व्व गृहस्थोंके लाभ के अर्थ
बाबू नवीन चन्द्र राय जी के द्वारा विरचित किया ॥

वही पहिली बार

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई

अक्टूबर सन् १८८१ ई॰

श्रीगणेशायनमः

ग्रन्थ कार की उक्तिः

जगत्स्रष्टा परमेश्वरने जो २ बस्तुवें मनुष्यों के उपकारार्थ सृजन किये हैं तिन सबों में बुद्धि श्रेष्ठ है। इस बुद्धि के बलसे पृथिवी के और सब जीवों से मनुष्य श्रेष्ठ है। बुद्धिसेही क्षुद्र मनुष्य प्रकाण्ड काय सिंह और हस्ती इत्यादिकों को दमन करता है उलङ्घ्य गिरि समुद्रादि पार होके पृथिवी के सब स्थानों में परिभ्रमण करता है, प्रबल तर बेगवती नदियों के ऊपर और नीचे सेतु और पंथ निर्म्माण करता है; निर्जीव धूमसे सजीव अश्वादिकों का असाध्य काम करवाता है; बाष्पीय शकट द्वारा छय महीने का पंथ छय दिन में शत २ मनुष्यों के सहित तै करता है; वैद्युतीय बार्त्ता वह द्वारा समस्त पृथिवी का समाचार एक दिन में पा सक्ता है; ज्योति मंडलान्तर्गत लक्षाधिक योजनान्तरित लोकों की आकृति प्रकृति और गति निर्धारण करता है परन्तु जैसे सेना हीन नृप स्वकार्य्य के निमित्त समर्थ नहीं होता तैसे ही बिद्या हीन बुद्धि अपना प्रभाव नहीं दिखला सक्ती बुद्धि की वृद्धि के निमित्त और भिन्न २ देशीय तथा दूरस्थ बुद्धिमानों की बुद्धि के परिचय प्राप्त होने और ऐक्यता सम्पादन के निमित्त, बिद्या ही एक अनन्य उपाय है। इस भूमण्डल में सहस्राधिक बत्सर पूर्व्व जो २ महात्मा और बुद्धिमान बास करते थे उनकी उक्ति, अभिप्राय और मनोगत भावों को हमलोग बिद्या के बलसे इस प्रकार जान सक्ते हैं कि जैसे पिता के अभिप्रायों को पुत्र जान सक्ता है। बस्तुतः इस संसार में जिसने सम्यक् प्रकार बिद्योपार्जन न किया वह ज्ञान चक्षु के अभाव से विश्व नियन्ता के असीम ज्ञान कार्य्य और कौशलों के संदर्शन असमर्थ होने से अन्धवत आयुः शेष करता है बिद्या के सौन्दर्य्य को बिद्वान ही

देख सक्ता है दूसरा नहीं। परन्तु जो लोग यह जानते हैं कि मैं विद्वान हूं अथवा स्वजन कुटम्ब और स्त्रियों में विद्या प्रचार करने में कुण्ठित होते हैं; उन्होंने विद्या का फल आस्वाद नहीं किया है, न विद्या के प्रशान्त तत्व को उन्होंने जाना है जिसने विद्या की ज्योति देखी है वह अपने पुत्र कन्या अथवा स्त्रियों को अन्धकाराच्छन्न नयन रखने की इच्छा कभी न करेगा बहुत लोग अपनी २ स्त्रियों को नाना विधि रत्नालङ्कारों से भूषित करते हैं, परन्तु मुक्ति और ज्ञान का साधन विद्या रूप परम रत्न से उनको वञ्चित रखते हैं, यह दयालु और विवेचकों का काम नहीं है "विद्या साधितया नारी भूषया, लङ्कृता यदा तदा विभूषितां मन्ये ननु हेमे न भूषिता;" बहुत लोग यह समझते हैं कि स्त्रियों के शरीर में रिपु बलवान हैं उनको विद्या मिलने से तिनकी ओर भी सहायकर्त्ता होगी। यह बड़ा भ्रम है यह लोग केवल अक्षर अथवा चिट्ठी पत्री लिखने की सामर्थ्य को विद्या समझते हैं। यद्यपि इतने अभ्यास से भी कुछ सांसारिक सहायकता होती है, तथापि इसको प्रकृत विद्योपार्जन नहीं कह सक्ते। जब तक धर्म्माधर्म्म का परिज्ञान न हो, सत् असत्, का विवेक न हो आत्मा संसारिक तुच्छ भावों से विमुक्त न हो, तब तक इसको विद्या प्राप्ति नहीं कह सक्ते, विद्या मही रुह सबसे ऊंचा है, व्याकरण इसका स्कंध है; अंक विद्या, प्राणि विद्या, पदार्थ विद्या, भूगोल, खगोल, देश वृत्तान्त, लोक वृत्तान्त, राज्य वृत्तान्त, पुरावृत्त, इतिहास, पुराण, स्मृति, दर्शन शास्त्र, चिकित्सा इत्यादि इसके अनेक शाखा हैं, अर्थ विद्या, शिल्प विद्या, प्रभृति इसकी शाखा हैं, काव्यालङ्कार, छन्द, प्रभृति इसकी लता हैं ब्रह्मविद्या इसका शिखर है; पाठ इसका मूल है; लिखना इसका सार है, अभ्यास इसका वल्कल है असंख्य पुस्तक इसके पत्र हैं; ज्ञान इसका फल है और संस्कृत, हिन्दी, बङ्गला, फारसी, अरबी, अंगरेज़ी, लाटिन, ग्रीक हीब्रू प्रभृति भाषा इसकी जाति है जब तक स-

नुष्य इस बिटपके शाखाओं पर्य्यन्त आरोहण नहीं करता, तब तक इसका फल इसे क्योंकर मिल सक्ता है। अधिकन्तु संसारारण्य में कामादि व्यालों से बचने का उपाय विद्या रूप उच्च वृक्षही है। यह हरकोई स्वीकार करेंगे कि कामादि कोंका दमन जैसे ज्ञानसे होता है, ऐसा और किसीसे नहीं; परन्तु ज्ञान प्राप्ति का उपाय एक विद्याही है इसकारण क्या इस्त्री क्या पुरुष, सबको विद्योपार्जन करना चाहिये। बहुत लोग समझते हैं कि विद्या सीखना केवल जीविकाके निमित्त है; यहभी उनका बड़ा भ्रम है। जीविका चाहे इसका आनुषङ्गिक फल हो; मुख्य फलतो इसका ज्ञान प्राप्ति है जो कोई आपत्ति करें कि विद्याका जितना विस्तार तुमने वर्णन किया इतना सीखने का कन्याओं को अवसर कहां है, तोउनको समझना चाहिये कि जैसे कोई फल प्रीप्सु मनुष्य दो चार शाखाओं में चढ़ने सेही यथेष्ठ फल प्राप्त हो सक्ता है; वृक्षकी प्रत्येक शाखाओं पर परिभ्रमण करने की उसे बहुत आवश्यकता नहीं रहती; जैसेही विद्याकी मध्य प्राप्त होनेसे अर्थात् ज्ञानवानों की लिखित कोई पुस्तक हो उसको अनर्गल पढ़लेना और उसके तात्पर्य्य को सम्यक् प्रकार समझ लेना, इतना सामर्थ्य होने सेही ज्ञान द्वारा उसके निमित्त खुलजाता है। अधिकन्तु संसार के तुच्छ चेष्टाओं में स्त्री पुरुषों की सारी आयु व्यतीत होजाती है, तो दोनों इस लोक और परलोक के सहायक विद्या रत्न के लाभके निमित्त चार पांच बरष व्यय करना कुछ अधिक है? ऊपर कह आये कि विद्योपार्जन विविध भाषाओं में होसक्ता है जानना चाहिये कि स्वदेशीय भाषा में विद्योपार्जन करना जैसा सुकर उपाय है, ऐसा और नहीं है। इस देशकी भाषा हिन्दी है; परन्तु दुर्भाग्य वशतः इस भाषाकी उन्नति में विद्वानों का यत्न इन दिनों में बहुत कम है इसी निमित्त संस्कृत, बङ्गला अंगरेजी प्रभृति भाषाओं में जितनी ज्ञानगर्भ पुस्तकें हैं उसका सहस्रांश भी हिन्दी भाषा में नहीं अत एव देश हितैषी विद्वानोंके निकट प्रार्थना

है कि अन्योन्य भाषाओं में जो २ पुस्तक पाठ करके उनको आनन्द मिला है, वह २ पुस्तक इस भाषा में अनुवाद करके, और अन्योन्य अभीष्ट पुस्तकों की रचना करके लोकों का और देश का उपकार करें। स्त्री शिक्षोपयोगी पुस्तकों का यह एक क्षुद्र प्रकरण विद्वन्मण्डली में उपहार प्रदान करता हूं जो इस पर उनकी कृपा दृष्टि हो, और महिला गण इसको यथोचित पाठ करें, तो उनके योग्य अन्योन्य पुस्तक विरचन करने में यथा शक्ति यत्न करूंगा। मेरी इच्छा थी कि इस पुस्तक में संस्कृत मूलक हिन्दी भिन्न और किसी देशीय भाषा अर्थात् फ़ारसी इत्यादि शब्द न मिलाये जावें; परन्तु किसी २ वस्तु के अनुरोधानुसार कन्याओं को अर्थावगति की सुगमता के निमित्त कहीं २ प्रचलित उर्दू भाषा के शब्द व्यवहृत हुए हैं, परन्तु सुशिक्षित स्त्री अथवा पुरुषों के पाठोपयोगी पुस्तकादिकों में ऐसे भिन्न देशीय शब्दों की आवश्यकता न होगी; क्यों कि संस्कृत अक्षय भण्डार है, जिस प्रकार शब्द प्रयोजनीय हो उसमें से मिल सक्ता है, और हिन्दी भाषा में उसका व्यवहार मनोहर प्रतीत होता है। परिशेष में स्त्री शिक्षा प्रवर्त्तक महाशयों से और कन्याओं के माता पिताओं से प्रार्थना है कि वे जिस महत्कार्य्य में प्रवृत्त हुए हैं, उसको सम्यक् प्रकार सम्पूर्ण करें; अर्थात् बालिकाओं को स्वल्प मात्र विद्यारसास्वाद कराके ही निरस्त न होवें; परन्तु उनकी ज्ञान ग्राहिणी वृत्ति को सम्पूर्ण रूप चरितार्थ करें॥

॥ श्री नवीनचन्द्र राय ॥

इति

लक्ष्मी सरस्वती सम्बाद

लक्ष्मी बहिन सरस्वती अबतो यहां बहुत लड़कियें पढ़ने लगीं। तुझे भी पढ़ते हुए बहुत दिन होचुके। कभी २ मेरा भी चित करता है कि मैं भी पढ़ने बैठूं इसमें तेरी क्या सलाह है

सरस्वती यह तूने बहुत अच्छा बिचारा। मैं तेरी बात सुनकर बहुत खुश हुई। सच पूछे तो जिसने संसार में आकर विद्या न सीखी, उसका जीव नही निष्फल है ॥

लक्ष्मी बहिन तूने इतना पढा चाह तो बिद्या में क्या क्या गुण हैं। मेरी समझ से तो अभी कुछ नहीं आता; देखा देखी मुझको भी पढ़ने की चाह हुई है ॥

सरस्वती बिद्या में इतने गुण हैं कि उनका कुछ बयान नहीं होसक्ता। देख जिसने कभी मिठाई नही खाई हो उसको मीठे का स्वाद मुझसे कहे तो वह क्या समझेगी। सो जब तू पढ़ जायगी तब बिद्या के गुण सब तुझको आपही मालूम हो जायंगे; पर अब मैं तुझको कुछ थोड़ासा सुनातीहूं; इसको चित देकर सुन और मनमें अच्छी तरह समझ ॥

बिद्यासे आदमी को ज्ञान धर्म्म और संसार इन तीनों की समझ होतीहै; और ऐसी समझ क्यास्त्री क्या पुरुष सबको चाहिये, इसलिये यह तीनों बातें मैं तुझे क्रमसे अलग २ समझाऊंगी ॥

लक्ष्मी बहिन तेरी बातें मुझको बहुत प्यारी लगती हैं, तूने कहा कि विद्यासे ज्ञान धर्म्म और संसार इन तीनों की खबर होती है, सो पहले यह कहो कि ज्ञान किसको कहते हैं ॥

सरस्वती ज्ञान नाम है जानने का, जानने के लायक बहुत चीज़ें हैं, जैसे नीति शास्त्र, धर्म्मशास्त्र, अङ्कशास्त्र, देश- वृत्तान्त, लोक वृत्तान्त, पदार्थ विद्या, प्राणि विद्या शिल्पविद्या, इत्या

दि; इसमें स्त्रियों को पहले नीति शास्त्र जानना ज़रूर है; इस लिये पहले तुझको कुछ नीति कथा सुनाती हूं॥

नीति शास्त्र का बड़ा उपदेश यह है कि कभी झूठ बोलना नहीं चाहिये जो स्त्रियें झूठ बोलती हैं उन का कभी कोई बिश्वास नहीं करता। इसकी एक कहानी है। किसी गांव में जयपाल नामक एक खत्री रहता था। उसके घर में एक लड़का और दो लड़किये थीं। लड़का दो बर्ष का था, और लड़की एक सात बर्ष की एक पांच बर्ष की। बड़ी लड़की का नाम गुलाब देई, छोटी का नाम पार्बती था। उस गांव में बन्दर बहुत रहते थे; जब कभी खत्री बड़िये दाल या और कोई चीज़ छत पर सुखाता तो गुलाब देई तमाशा देखने के वास्ते कोठे पर चढ़के झूठ मूठ चिल्लाया करती कि, बन्दर आये, बन्दर आये। उसकी मा चाची और और औरतें अपना २ काम छोड़कर बन्दर हंकाने को आतीं। उस बख़त वह लड़की खिलखिला कर हंसती और कहती कि देखो मैंने तुम को कैसा धोखा दिया। इस्से उस कन्या का एतमाद बिलकुल जाता रहा। जो कभी वह सच भी बोलती थी तोभी उसकी बात को कोई सच नहीं मानता था; क्योंकि वे सब जानते थे कि यह लड़की झूठ बोलने वाली है। परन्तु पार्बती बड़ी सच्ची लड़की थी; उसकी बात पर सब कोई बिश्वास करते थे। एक दिन का ज़िक्र है कि उस खत्री का लड़का कोठे पर सोता था, और गुलाब देई वहां बैठी थी। इतने में एक बड़ी बन्दरी लड़के के तरफ़ आई गुलाब देई डरकर चिल्लाने लगी कि, मेरे भाई को बन्दरी उठाये लिये जाती है; परन्तु किसी ने उसकी बात पर बिश्वास नहीं किया। पार्बती गली में चली जाती थी उसने नीचे से देखा कि उस्के भाई को बन्दरी उठाने लगी है। वह दौड़कर घर में आई और चाची को इस बात की खबर दी। उस्की बात को सब कोई सच मानते थे; इस वास्ते उसकी मा और चाची कोठे पर दौड़ी, और बालक को

बन्दरीसे बचाया। तब गुलाब देई के मनमें यह शोच हुआ कि देखोमैं इतनी चिल्लाई तौभी मेरी बात को किसीने नमाना; जो पार्वती नबोलती तो मेरे भाई को आज बन्दरी ज़रूर मारडालती। यह मेरेलिये नसीहत हुई; आजसे मैंभी कभी झूठ नहीं बोलूंगी ॥

लक्ष्मी। झूठ बोलना बुराहै यह तो मैंभी जानती हूं, परन्तु बहुत काम ऐसे होतेहैं कि उनमें सच बोलनेसे नुक्सान होताहै। देखदूकानदार झूठ नबोलें तो उनको नफ़ा कैसे हो; जो कोई काम अपने से बिगड़ जाय तो वहां झूठ बोले तो लोगों में बदनामी हो और माबाप भाई मारें धमकावें ॥

सरस्वती यह तेरी बड़ी भूलहै। जो दूकानदार झूठ बोलना छोड़ दे; उसको जबतक लोग नजानें कि यह झूठ नहीं बोलता तबतक कुछ थोड़ासा नुक्सान चाहे होजाय; परन्तु जब लोग जान जायंगे कि यह झूठ कभी नहीं बोलता है, तब उसका बहुत एतमादकरेंगे; और उसको पहिले से ज़्यादा नफ़ा होगा; क्योंकि सच बोलने वाले के पास खरीदार बहुत जाते हैं। और जोकि तूने कहा कि अगर कोई काम अपनेसे बिगड़ जायतो वहां झूठ बोले बिना काम नहीं चलता, यह भी तेरी बड़ी भूलहै; क्योंकि जो लोग सच बोलते हैं वे और बुरे कामोंसे भी डरतेहैं; इसलिये उनसे कोई कसूर नहीं होता। जो भूले चूके से कोई काम बिगड़ भी जाय तौभी सच बोलने से भलेमानस लोग उसके क़सूर को माफ़ करदेतेहैं और उसको दिलसे पसंद करतेहैं। असल बात तो यहहै कि सच बोलनेसे चाहे ज़ाहरमें पहिले नुक्सान भी हो तौभी अन्तमें उसका भलाही होताहै, जैसे धनपति सौदागरकी छोटी बेटीका हुआथा ॥

लक्ष्मी धनपति सौदागर की छोटी बेटी का सच बोलने से कैसे भला हुआथा ॥

सरस्वती सुन: उज्जैन नगरमें धनपति नाम एक बड़ा धनी बनिया रहता था उसके चार कन्या थीं, पुत्र कोई नथा। छोटी कन्या को उसने बालकपनसे पढ़नेबैठायाथा। थोड़े दिनों में वह गुरूके पास नीतिशास्त्र और धर्म्मशास्त्र का अच्छा उपदेश पाकर बड़ी बुद्धि

मती धर्म्ममति और शीलवती हुई उसने यह प्रण कियाथा कि-
चाहे जानजाती रहे तौभी मैं झूठ नहीं बोलूंगी। उसकी बड़ी तीन ब
हेन मूर्खथीं। वे झूठ बोलने से कुछ नहीं डरती थीं, और अपने बा
पके धनसे गर्वित थीं। जब उनकी ग्यारह बारह बर्ष की उमर
हुई तब बापको उनकी शादी का फ़िकर पड़ा एक दिन बापने
अपनी चारों बेटियों को बुलाया और प्यारसे उसने पूछा कि मैं
अब बूढ़ा होगया हूं, किसी दिन मेरा चोला छूट जायगा, मेरे इस
धन दौलत का भोगने वाला तुम चारों कन्याओं बिना और कोई
नहीं है; इसलिये मेराजी चाहता है कि अपने जीतेजी तुमको अ-
पने आंखों के सामने से दूर न करूं; परन्तु कुलके रीतके अनुसार
तुम्हारे व्याहका समय आपहुंचा है, और व्याह के पीछे तुम्हारे।
ऊपर मेरा कुछ जोर न चलेगा, जहां तुम्हारे पतिकी खुशी होगी व-
हां लेजायगा, सो तुम अपने मनकी बात अब मुझसे कहो कि जैसे अ-
व तुम मेरी भक्ति और सेवा करती हो तैसीही पीछे भी मेरी भक्ति
और सेवा करोगी और मेरे सामने रहोगी कि नहीं। यह सुनकर
बड़ी बेटी बोली कि हे पिता ऐसी बात तुमको कहना न चाहिये,
मैं जीते जी तुमको छोडके दूसरी जगह कभी न जाऊंगी और तु-
मसे ज्यादा भक्ति के योग्य जगत में मेरा और कोई भी न होगा,
और तुम्हारे बिना मैं और किसीकी बात न सुनूंगी दूसरी बेटी
भी इसी प्रकार बोली और तीसरी भी बाप सुनकर बहुत खुश हुवा
और मनमें शोचने लगा कि अब ऐसे बर ढूंढने चाहिये कि जो घ
र जमाई रहना मञ्जूर करें। इतने में छोटी बेटी के बोलने की बारी आ-
ई। उसने शोचा कि मेरी बड़ी बहनों ने तो सिर्फ़ खुशामद की बातें
कही हैं, जो मैंभी ऐसीही कहूं तो जरूर कुछ झूठ का अंश आजा-
यगा और झूठ बोलना बड़ा पाप है इसलिये सच्चही कहना चाहि
ये। यह मनमें ठान मस्तक नीचा कर हाथ जोड़ पितासे कहने लगी
कि हे पिता धरती पर लड़के लड़कियों को माता पिता के समान पूज
नीय और भक्तिके योग्य दूसरा कोई नहीं है; अनेक प्रकार क्लेश सह

कर माता पिता अपने सन्तान की रक्षा और प्रतिपालन करते हैं इस
लिये शास्त्र में कहा है "यं माता पितरौ क्लेशं सहेते संभवे नृणां ॥ न-
तस्या निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि" यानें लड़कों के पैदा हो-
ने में मा बाप जितना क्लेश सहते हैं उसका बदला लड़का सौ वर्ष
में भी नहीं दे सक्ता, और भी कहा है "माता गुरुतरा भूमेः खात्पितो-
च्चतरस्तथा" माता पृथिवी से भी अधिक गुरु है और पिता को आ-
काश से भी ऊंचा जानना चाहिये। इसलिये आपकी भक्ति और
सेवा हमारा धर्म्म है और परलोक का सहायक है; परन्तु कन्या
जब सम्प्रदत्ता होजाती है तब उसका प्रधान धर्म्म यह होजाता है कि
शरीर और मन से अपने पति की सेवा करै और उसकी आज्ञानुसा-
रिणी हो, जैसे कि शास्त्रों में कहा है "मनोवाक्कर्म्मभिः शुद्धा पति
देशानुवर्तिनी" अर्थात् मन वाक्य और कर्म्म जिसके शुद्ध हैं औ-
र पति की आज्ञा में रहती है वही यथार्थ स्त्री है; "छायेवानुगता
स्वच्छा सखीव हितकर्म्मसु" स्त्रियों को चाहिये कि छाया के न्याईं
स्वामी की अनुगता होवे और सखी के न्याईं तिसके हित कर्म्म का
साधन करे और स्वच्छा रहे। यद्यपि इस लड़की ने शास्त्रानुसार
और सत्य कहा तौभी उसके बाप को छोटी लड़की की यह बातें अ-
च्छी न लगीं कुछ दिन पीछे उस साहूकार ने अपने ही नगर में तीन ब-
णिक पुत्रों के साथ अपनी बड़ी तीनों कन्याओं की अच्छी धूमधा-
म से शादी करदी और अपना सारा विरसा उन तीनों बेटियों को बां-
ट दिया और छोटी बेटी को एक गरीब बणियें का लड़का जो कि सं-
सार की चतुराइयों से कम वाकिफ था और साधु स्वभाव था उसके
साथ व्याह कर जुदा करदिया। बड़ी तीनों बेटियां अपने स्वामियों
के साथ कुछ दिन पिता के घर में रहीं परन्तु धन उसका अब उन्हीं के
साथ में आगया था इसलिये उसका आदर अब इतना नहीं करती
थीं। थोड़े दिनों के पीछे उन तीनों बणिक पुत्रों ने एक दूसरे नगर में
जाकर सौदागरी की एक दूकान खोलने की सलाह की; परन्तु उसका
श्वशुर राजी न हुआ कि यह दूसरी जगह जावें। उन्होंने उसको वहां ही-

छोड़ अपना माल मत्ता और कबीलों कोले दूसरे नगरमें जा एक बड़ी दूकान खोली मगर वे बड़े ऐय्री और बद चलन थे, इस लिये थोड़े दिनोंमेंही उनकी तमाम दौलत बरबाद होगई; तोभी झूंठ और फ़रेब से उन्होंने अपना परदा बना रक्खा था एक समय उस नगरके एक सौदागर का लड़का किसी दूसरे मुल्क में सौदागरी को जाने लगा, उन्होंने भी उस्के साथ अपना साझा किया और संग होलिये। जबकि पांच सात मंजिल पहुंचे तब उन्होंने आपस में सलाह किया कि आओ इस साहूकार बच्चे को धोखा दे माल हथयाले किसी और तरफ को चलदीजिये एकरोज उन्होंने ऐसाही किया कि जब साहूकार बच्चा एक नदी पर स्नानके लिये गया तब पीछे से उस्का तमाम माल और रुपया लेके जंगल की तरफ चले गये साहूकार बच्चा जब स्नान करके आया तो क्या देखता है कि जहां डेरे टिके थे न वहां उस्के तीनों साथी हैं न उस्का कुछ असबाब है, यह देखकर वह बड़ा व्याकुल हुआ, पर क्या करे परदेश का मामला था, उस्से कुछ बन न पड़ा। जब सांझ हुई तब रोते २ उस नगर की एक गली में अकस्मात जा निकला जहां धनपत सौदागर की छोटी बेटी और जमाई रहते थे। उन्होंने देखा कि उस लड़के पर कोई मुसीबत पड़ी है; इसलिये उसे पास बुलाया और दिलासा देकर सारा हाल उस्का पूछा और उसके विपत्ति का वृत्तान्त सुनकर वे दम्पति बड़े दुःखित हुए; परन्तु वे अच्छे सामर्थ्य वाले थे उनको सब लोग सत्यवादी जानते थे और उनका बड़ा एतबार करते थे, इसलिये रोजगार में भी उनको अच्छा नफा हुआ था, दो तीन दिन उस विपन्न लड़के को अच्छे आदर से अपने घर में रख अच्छा धन असबाब देकर उन्होंने रवाना किया उस लड़के ने सोचा कि पहिले सफर मेंही मुझपर यह मुसीबत पड़ी यात्रा अच्छी नहीं है चलो घर लौट चलें पांचवें रोज अपने नगर में आ पहुंचा और अपने बाप को सफ़र का सारा माजरा कह सुनाया बाप उस्का राजसभा में एक मुसाहब था दरबार में जाकर

उसने अर्ज़ की कि धनपत सौदागर के जो तीन जमाई इस नगर में आकर बसे थे उन्होंने मेरे लड़के के साथ ऐसी दग़ाबाज़ी की, राजाने हुक्म जारी किया कि उसके राज्यमें जहां कहीं धनपत सौदागर के जमाई होवें पकड़ के भेजे जावें, परन्तु उन तीनों फरेबियों का पता नलगा जिस नगर में धनपत की छोटी लड़की और जमाई रहते थे, जब उस नगर के हाकिम के पास राजा का फरमान पहुंचा तब उस हाकिम ने अपने शहर में तलाशुी की। शहर के लोग और पड़ोसी धनपत के जमाई और तिस्की स्त्री को बहुत मानते थे, इसलिये उन्होंने उस्को सलाह दी कि अपने श्वशुर का नाम बदल दो असल नाम नबतावो नहीं तो पकड़े जावोगे, राजा का हुकुम आया है। यह बात सुनकर उस धर्मवती इस्त्रीने अपने स्वामीसे कहा कि हे स्वामी इस जग में सदा जीना नहीं है, झूठ बोल कर धर्म को छोड़ना उचित नहीं है, दिन भी सदा किसी के एकसे नहीं रहते। बनियां बड़ा साधु था, स्त्री की बात सुनकर खुश हुआ और हाकिम को जाकर इत्तला दी कि मैं धनपत का जमाई हूं जो राजा का हुक्म आया है तो हमको चालान कर दीजिये। हाकिमने यह सुन्तेही तुरन्त उस्को गिरफ़्तार कर लिया और दरबार में रवाना किया। राजाने भी बिना देखे सुने उस्के फांसी का हुक्म दिया। और उस्की स्त्री को क़ैदखाने में भेज दिया। जिस रोज़ उस्को फांसी होनेवाली थी उसरोज़ नगरके बहुत लोग उस्के देखने को आये। साहूकार बच्चेने भी सुना कि उस्का एक दग़ाबाज़ साथी पकड़ा गया है और उस्को फांसी का हुक्म हुआ है। वहभी उस्के देखने को आया; परन्तु क्या देखता है कि यह वही बणिक है कि जिसने उस्को बिपतमें उपकार कियाथा। तुरन्त उस्के पांवों में जागिरा; और सब लोगों के सामने बापसे कहने लगा कि यह मेरा दग़ाबाज़ साथी नहीं है यह मेरा उपकार कर्ता है जिसने मुझे सब कुछ देकर तुम्हारे पास भेजाथा। बापने सुनतेही

राजा को खबरदी और उसके गुणकी वर्णना की राजाने फांसी का हुकुम बंद किया और उसको कचेहरीमें बुलाय यथा योग्य सन्मान कर अपना वज़ीर बनाया अब वह बनियां और उसकी स्त्री आनन्द पूर्वक रहने लगी और धर्म्म और सच्चाई में उनकी औरभी दृढ़ भक्ति हुई कुछ दिन पीछे किसी मुल्क से एक सौदागर आया और इस साहूकार से मुलाकात की उसके साथ तीन गुलाम थे इसने पहचान लिया कि यह मेरे तीनों साहू हैं, सौदागर को उनकी कीमत देकर छुटा लिया और कुछ धन देकर उनको बिदा किया यह लोग जब अपने मित्रसे प्रवञ्चना अर्थात् फरेब करके भागे जाते थे उस समय रास्तेमें इनको कुछ डाकू मिल गये उन्होंने इन का तमाम माल लूटलिया और दूसरे देशमें जा सौदागरके हाथ बेच दियाथा बहेन लक्ष्मी धनपति और उसकी छोटी बेटी की कहानी तूने सुनी इससे तुझे क्या प्रतीत हुआ ॥

लक्ष्मी इससे मालूम हुआ कि जो लोग सच बोलते हैं और धर्म्म में रहते हैं उनका जो सच बोलने से पहिले कभी नुकसान भी होजाय तौभी अन्त में उनका भला होता है; और जो झूठ बोलते हैं और फरेबी होते हैं वे चाहे कैसेही बड़े होवें आखीरमें उनकी खराबी होती है ॥ (१)

सरस्वती यह तूने दुरस्त समझा; परन्तु इन दम्पति में दूसरा एक और बड़ा गुण था कि गरीब अथवा विपद् ग्रस्त पर दया करना; यह भी एक नीति शास्त्र का बड़ा उपदेश है क्योंकि शुकदेव जीने कहा है "भीते क्षुधार्त्ते विकले त्वरान्वितेरोगाभिभूते बहुदुःखिताम्तरे । दयान्तरं यः पुरुषो नसेवते, वृथान्तरं तस्य नरस्य जीवितम्" अर्थात् जिसका चित्त भय क्षुधा और रोगादि कोंसे विकल हो रहा है और अन्तःकरण जिसका बहुत दुखित हो, ऐसे पर जो पुरुष दया नहीं करते हैं उनका जीवना ही वृथा है ॥

लक्ष्मी दया करना भी सामर्थ्य वाले का काम है हरकिसी का तो नहीं

(१) अर्थात स्त्रीपुरुष

वृत्तान्त देख उसके मा बाप और और पड़ोसियों ने भी दयाका गुण पढ़ चाना ॥

लक्ष्मी सच बोलना और गरीब पर दया करना यह दोबातें मेरे दिल में अच्छी तरह बैठ गई हैं अब और कछु सुना ॥

सरस्वती मैं पहिले कह चुकी हूं कि दया उसपर कीजाती है जो अपनेसे कम अथवा छोटा हो परन्तु जो अपनेसे बड़े हों उनका मान आदर और सेवा करना चहिये ॥

लक्ष्मी बड़ोंका मान किस रीतिसे करना चाहिये और किनको २ बड़ा जानना चाहिये ॥

सरस्वती कन्या को पहिले मा बाप बड़े हैं इनको साक्षात् देवता की नाई जानना चाहिये फेर ताऊ, चाचा, मामा, नाना, ताई, चाची, मामी, नानी, बड़ा, भाई, भावज, गुरु, ज्ञान, दाता इत्यादि सब बड़े हैं इनके सामने सदा विनीत होना चाहिये कभी ऊंचा नबोलना चाहिये जो कभी यह खफा हों तो इनकी बराबरी न करना चाहिये जो अपने से कुछ कसूर होगया हो तो क्षमा प्रार्थना करनी चाहिये और फेर जिस्से वह कसूर न हो ऐसा यत्न करना चाहिये जब विवाहिता हो जाय तब स्वामी कुल में जो जो बड़े हैं यथा सास श्वशुर, जेठ, जिठानी, ननद प्रभृति इन सबों का पूर्वोक्त रीति अनुसार सन्मान करना चाहिये और सदा इनकी आज्ञा में रहना चाहिये ॥

लक्ष्मी विवाहिता स्त्रियों को और क्या २ करना चहिये सोभी कहो तेरा तो अभी व्याह नहीं हुआ पर शास्त्र के बलसे तू सब जानती है इसी लिये बुद्धि मान कहते हैं कि पढ़ा हुआ नेत्रवान् होता है और विना पढ़ा अन्धा ॥

सरस्वती तूने जो बात पूछी यह सब स्त्रियों को विशेष कर के जानना चाहिये इस विषय शास्त्रों में जो कुछ लिखा है सो मैं तुझको सुनाती हूं, तू इन बचनों को कण्ठस्थकर रखना क्योंकि यह तेरे दोनों इस लोक और परलोक के सहायक होंगे स्त्री के प्रति प्रधान उपदेश यह है कि अपने पतिकी अन्तः करण के

साथ भक्ति करे। क्योंकि लिखा है; "पतिं यानाभिचरति मनो वा ग्देह संयुता, साभर्तृ लोका नाप्नोति सद्भिः साध्वीति चोच्यते;" जो स्त्री मन बचन और शरीर द्वारा स्वामी की भक्ति में लगी रहती है और कभी तिस्से व्यभिचार नहीं करती, अर्थात् मनसे अन्य पुरुष का चिन्तन भी नहीं करती, बाणी से कभी अपने पति की निन्दा अथवा ग्लानि नहीं करती; सो स्त्री अन्तकालमें स्वामीके लोकको प्राप्त होती है, और अच्छे लोग उसको साध्वी कहते हैं। "बिशीलः काम वृत्तो वा गुणैर्वा परि बर्ज्जितः, उपचर्य्यः स्त्रिया साध्वी सततं देववत्पतिः। जो अपना पति दुःशील होवे, कामी होवे, अथवा उसमें अच्छे गुण न होवें, तौभी सती स्त्री को चाहिये कि उस्की देवता के न्याई सेवा करे। "ग्रानकूला न बाग दुष्टा, दक्षा साध्वी पतिव्रता एभिरेव गुणैर्युक्ता श्रीरेव स्त्री न संशयः।" अपने पति के मरज़ी माफ़िक चलना, कभी कड़वी बोली न बोलना, घरके कामों में चतुर होना, साधु स्वभाव और पति व्रता होना, यह गुण जिस स्त्री में हों उस्को साक्षात् लक्ष्मी स्वरूपा जानना चाहिये। "याहृष्ट मानसा नित्यं स्थान मान बिचक्षणा, भर्तुः प्रीति करी नित्यं साभार्य्या हीतरा जराः।" जो स्त्री सर्बदा प्रसन्न रहती है अपने स्वामी के मर्य्यादा और मन को अच्छी तरह पहिचानती है और पति को जो अच्छा लगता है वही नित्य करती है ऐसी स्त्री ही यथार्थ भार्य्या है बाकी स्त्रियें सब जरा स्वरूपा हैं। "नोच्चैर्वदेन्न परुषं नबहून् पत्युरप्रियान्, नकेनापि विवदेद प्रलाप विलापिनी। प्रमादोन्मादरोषेर्ष्या वञ्चनञ्चाभिमानिता, पैशुन्यहिंसाविद्वेष मोहाहङ्कार धूर्तता। नास्तिक्य साहस स्तेय दम्भान् साध्वी बिबर्जयेत।" साध्वी स्त्री के लक्षण यह हैं कि ऊंची बोली कभी न बोले, न कड़वी बोली बोले और पति को जो अच्छी न लगती हों ऐसी बातें भी बहुत न बोले किसी से लड़ाई झगड़ा न करे, और बेफ़ायदा बातें न बके और प्रमाद उन्माद

२गुस्सा ३ ईर्षा ४ फरेब ५ अभिमान ६ चुगली ७ हिंसा ८ द्वेष ९ मोह १० अहङ्कार ११ धूर्त्तता १२ नास्तिकय १३ दुःसाहस १४ चोरी १५ और दम्भ १६ यह सोलह बातैं साध्वी स्त्री को सदा त्याग करना चाहिये ॥

लक्ष्मी इनबचनोंका असल मतलब मुझको साफ२ बतलाओ।

सरस्वती सुन मैं तुझको एक२ बात अलग२ समझाती हूं। पहिले तो स्त्री का मुख्य धर्म्म यह है कि अपने पतिसे परम प्रीति करै, और तिस्की भक्ति और सेवा में सदा लगी रहै ॥

लक्ष्मी जो पति अच्छा होतो उस्पर ज़रूर स्त्री की भक्ति होती है: परन्तु बहुत पुरुष बड़े बदचलन होते हैं, उनपर क्योंकर भक्ति होसक्तीहै

सरस्वती अच्छे पतिपर तो आपही प्रीति होतीहै, उस्में स्त्री का अहसान क्या हुआ, अपने स्वार्थके लिये प्रीति करना भक्ति नहीं कहलाती जो धर्म्म जान कर भक्ति करती हैं, पति नेक हो या न हो, उसीको असल भक्ति कहते हैं। जो पति बदचलन भी हो तो भी स्त्री को चाहिये कि उस्की सेवा में कसर न करें, न उस्की अवज्ञा करें अथवा सख्त बोली बोलें, परन्तु जब मौका लगे मीठी बातों से उस्को ऐसी सलाह देदें कि जिस्से उस्का दिन बुरे कामों से हटकर अच्छे कामों में लगे। शास्त्र में लिखाहै कि राजा नल अपनी स्त्री दमयन्ती को धोखा देकर बनमें अकेली छोड़के चलागयाथा, तोभी उस्की स्त्री ऐसी पतिव्रता और सतीथी कि अपने पतिपर बिलकुल उसने गुस्सा नकिया, और बहुत क्लेश से फेर अपने पति को ढूंढ लिया ॥

लक्ष्मी राजा नल अपनी स्त्री को क्यों छोड़ गयाथा, इस्का सारा अहवाल मुझे सुना ॥

सरस्वती यह अहवाल बहुत बड़ा है मैं तुझे संक्षेप से कुछ थोड़ासा सुनाती हूं। राजा नल बड़ा सत्यवादी और धर्म्मिष्ठ था, और उस्की स्त्री दमयन्ती बड़ी सती थी। किसी पाप से राजा नल की मति कुमति होगई थी; छोटे भाई से जूआ खेलकर धन दौलत राज पाट सबकुछ हार गयाथा। भाई

ने उस्को अपने देश से निकाल दिया। तब वह बनमें जाने के समय अपनी स्त्री से कहने लगा कि हे प्रिये मुझ परतो अब यह मुसीबत पड़ी है, कहे तो तुझे तेरे बापके घर पहुंचादूं। बाप तेरा राजा है, वहां तू आराम से रहेगी, जब मेरे दिन फिरेंगे तब मैं तुझको बुला लूंगा। दमयन्तीने जवाब दिया कि महाराज आपके चरणों से दूर होकर मैं क्योंकर जीऊंगी। बनमें मुझे चाहे कितनाही शरीरिक क्लेश मिले, आपके संग रहने से मुझे कुछ भी मालूम नहोवेगा; और आपके बिना चाहे हजारों सुख हों वह मेरे किसी काम के नहीं। लाचार नल ने दमयन्ती को अपने साथ ले लिया। जङ्गल में चलते २ दो-तीन दिन होगये, खाने को कुछ भी नमिला, और जो कुछ थोड़ा बहुत मिला था, वह भी उनकी कम नसीबी से हाथ से-जाता रहा। इतने में नलने एक पक्षी को पेड़ पर बैठे हुए देखा, शोचा कि अगर यह पकड़ाई देवे तो इसी से आजका भोजन हो। कपड़ा अपना उतार पकड़ने के लिये उस पक्षी पर फेंका; पक्षी कपड़े समेत आसमान में उड़गया। तब दमयन्ती ने अपने स्वामी की यह दुर्दशा देख, अपनी आधी धोती उसे पहरने को दी। दमयन्ती कई रोज की भूखी प्यासी थकी मांदी थी; उसे जो नींद आई तो नलके घुटने पर शिर रख के एक पेड़ के नीचे सोगई। नलने शोचा की स्त्रीको साथ लिये २ जंगल में कहां २ फिरेंगे कपड़ा आधा फाड़लिया, और उसको वहांही सूनी छोड़ एक तरफ़ को चलदिया; परन्तु जुदाई का अफ़सोस उस्के दिल में भरारहा। जब दमयन्ती जागी तो देखती क्याहै कि उस्का प्राणेश्वर पति वहां नहीं है। मारे ग़मके कलेजा उस्का फटने लगा; प्राण त्याग करने की इच्छा की; परन्तु फेर मिलने की आशा उस्के मन में थी, इसी लिये जान उस्की तनसे बाहर न हुई। रोते २ एक तरफ को चलदी। आगे देखती क्या है कि एक बड़ा सांप उसे काटने को चला आता है; परन्तु और तरफ से एक-

व्याध आनिकला; उसने उसकी यह मुसीबत देख सांप को मारडाला; परन्तु उससे कहा कि तू मेरे घर चल। दमयन्तीने कहा कि पतिव्रता स्त्री पर पुरुषे के घर क्योंकर रह सक्ती है। व्याधने उसका कहा नमाना। दमयन्तीने बन में अपने धर्म्म रक्षाका और कोई उपाय न देख परमेश्वरको स्मरण किया कि हे जगत का पालक और रक्षक तू सब जगह बिराजमान है, सबकी हृदय की बात तू जान्ता है, किसी मनुष्य का पाप पुणय तुझसे छिपा नहीं रहता है; जो आजतक सच्चाई में और धर्म्म में मेरा मन रहा हो और सिवाय नलके किसी अन्य पुरुष का मैंने चिन्तन भी न किया हो, तो इस दुष्ट व्याधसे मेरी रक्षा कर। परमेश्वर बड़ा दयालू है; विशेष करके सती स्त्री की प्रार्थना वह पूर्ण करताहै, और दुष्टका दमन करता है। उसके कोपसे व्याध तुरन्त भस्म होगया। इसके पीछे बड़ी मुसीबत और क्लेश से दमयन्ती अपने बाप के घर पहुंची नल एक राजा के यहां जाकर नोकर रहा। बहुत क्लेश और कष्ट से दमयन्ती ने उसका पता लगाया, किसी बहाने से पिता के राज्य में उसे बुलवाया परमेश्वर की अनुग्रह से स्त्री पुरुष का फेर मिलाप हुआ। नलकी भी मति शुद्ध हुई; फेर उसने अपना राज पाया; और दमयन्ती पहिले के न्याईं अपने स्वामी की भक्ति और सेवा में नियुक्त हो परम आनन्दको प्राप्त हुई। दमयन्ती का यह स्थूल वृत्तान्त मैंने तुझे सुनाया कहो इससे तुझे क्या प्रतीत हुआ॥

लक्ष्मी. इस कहानी से मालूम होता है कि सती स्त्री की भक्ति अपने पतिके प्रति कभी कम नहीं होती चाहे पति का कितनाही क़ुसूर हो, और जो स्त्रीयें अपने सत्य में रहती हैं परमेश्वर उनकी शुभ प्रार्थना सिद्ध करता है और विपद में रक्षा करता है और अन्त में उनको परमसुख प्राप्त होता है॥

सरस्वती बहन तेरी बुद्धि विमल है और संतों के उप-

देखा योगय है; अब आगे सुन कि स्त्रियों को संसार में किसरी-
तसे रहना चाहिये ध्यान रक्खो कि समय बड़ा अमूल्य ध-
नहै, इसको वृथा नष्ट नहीं करना चाहिये; जो और कोई
चीज़ जाती रहे तो रुपया खर्च करने से फिर मिल भी सक्ती
है, परन्तु समय ऐसी चीज़ है कि जो घड़ी बीत गई है चा-
हे हजारों रुपया खर्च करो फिर वह हाथ नहीं आवे गी;
इसलिये किसी बेला खाली नहीं रहना चाहिये, आल-
स्य को अपने पास आने देना न चाहिये, दिन रात आव
श्यक कामों में लगी रहना चाहिये ॥

लक्ष्मी बहेन यह बात तो तूने बड़ी सख्त सुनाई; दिन
रात किस्से काम किया जाता है; लड़कियों को दो चार घड़ी
खेलना भी चाहिये, स्त्रियों को दोचार घड़ी काम धन्धे से
आराम पाना चाहिये नहींतो वे कैसे जी सकें गी ॥

सरस्वती तूने मेरा कहा न समझा; मेरा मतलब यह नहीं है
कि स्त्रियें रात दिन कसीदाही काढ़ा करें, या चरखा काता करें
तात्पर्य्य मेरा यह है कि बेफ़ायदह बकवाय या सुस्ती आल-
स्य में समय गवाना नहीं चाहिये, परन्तु जो २ काम जरूरी हैं
वही करना चाहिये। अब सुन कि जरूर काम; कौन २ हैं। प-
हिले लड़कियों के काम कहती हूं, दिन रात के चौबीस घंटे
होते हैं, इनमें चार घंटे दिल लगाकर पढ़ना लिखना चाहिये;
चार घंटे शिल्प विद्या सीखना चाहिये, सिलाई, कसीदा का-
ढना, नक्शे खींचना, और ऐसे २ हाथ के और बहुत से का
म शिल्पविद्या में गिने जाते हैं। बाकी रहे सोलह घंटे; इनमें
से छय घंटे सोना चाहिये, दो घंटे नहाने धोने खाने पीने
में बीतें गे, बाकी आठ घंटे सखी सहेलियों में बैठना खेलना
और २ ऐसे काम जिस्से शरीर में फुर्ती आवे सो करना चा-
हिये। विवाहिता स्त्रियों के कामोंका इसप्रकारविभागहोसक्ताहै
यथा

नहाना धोना पूजा पाठ	१ घण्टा
रसोई और खाना पीना	४ घण्टा
घरकी सफाई, चीज़ बस्तु कपड़े इत्यादि संभालना, इनका यथायोग्य स्थानों में रखना, घरके कामकी चीज़ें बनाना जैसे बड़ियें, पापड़, अचार मुरब्बा इत्यादि	३ घण्टा
विद्याकी चर्चा	२ घण्टा
शिल्प कर्म	२ घण्टा
भाई बिरादरी में जाना, सखी सहेलियों में बैठना, जो लड़के बाले हों तो उनको पढ़ाना, लिखाना,	४ घण्टा
शयन, आराम	८ घण्टा

लक्ष्मी : ऐसे दिनरात हिसाब करके चलना तो किसीसे-भी नहीं हो सकेगा ॥

सरस्वती : मेरा तात्पर्य्य यह नहीं है कि मैंने जितनी२ देर एक२ काम करने को कहा ठीक उतनी२ देर और वही काम करें, यह तो मैंने सिर्फ़ एक अन्दाज़: बतलाया; बुद्धिमती स्त्रियों को चाहिये कि अपने प्रयोजन के अनुसार इसी रीतिसे अपने समय का यथायोग्य विभाग कर लेवें। अब सुन कि अपने बराबर वालियों से, और नाता गोता पड़ोसन प्रभृति ओंसे, किसप्रकार वर्त्तना चाहिये ॥

सब स्त्रियों से मीठी और मुलायम बोली बोलना चाहिये जो कोई अपना क़सूर करे या बुरा करे तो उससे लड़ना झगड़ना या कड़वी बोली बोलना कभी न चाहिये; उसे मुलायम बातों से समझा देना चाहिये कि तूने यह काम इस रीतिसे बुरा किया; यह तुझे योग्य नहीं है जो कोई अज्ञान स्त्री अपने से लड़ने आवे तो जब तक उसके गुस्सा रहे तब तक उसकी बातों का जवाब न देवे, जब वह ठण्ढी हो तब मीठी बोलीसे उसे समझा देवे, जो अपना क़सूर हो तो क़बूल करलेवे और उससे माफ़ी मांगे, और जो उसका कसूर

होतो उसे समझा देवे और आप क्षमा करे। जो अपना कोई उपकार करे तो उसके उपकार को भूले नहीं, और जो आप किसी का उपकार करे तो कभी उसकी शेखी न करे, और जाने कि यह मेरा काम ही है। शेखी कभी अपने मन में भी नहीं करना चाहिये; परके सामने शेखी करना तो बहुत ही बुरा है। चाहे आप कैसी ही गुणवती बिद्यावती धनवती और धर्म्मवती होवे तोभी जानना चाहिये कि दुनियां में इन बातों में मुझसे भी बड़ी सैकड़ों औरतें हैं पराई निन्दा कभी न करे, और न किसी की चुगली खावे; क्योंकि निन्दा करना बड़ा पाप है जो कोई बुरा काम करे तो उसे मुंहके सामने समझा देवे, परन्तु इस रीति से कि जिसमें वह खफा न हो शास्त्र में लिखा है;" सत्यंब्रूयात प्रियं ब्रूयात नब्रूयात सत्य मप्रियं;" प्रियंच नानृतं ब्रूयात् एष धर्म्मः सनातनः;" सच ऐसा बोले जो दूसरे को प्यारा लगे और जो प्यारा न लगे ऐसा सच बोलना निष्फल होता है, परन्तु दूसरे को प्यारा लगेगा यह जानकर कभी झूंठ भी न बोले जो किसी के हित के निमित्त सच कहे तो वह चाहे उसे प्यारा भी न लगे तोभी कहना उचित है, क्यों कि लिखा है "सत्यस्यच पथ्यस्य वक्ता श्रोताच दुर्लभः;" सच बात के और हित वाक्य के बोलने वाले और सुनने वाले दोनों दुर्लभ हैं ॥

पराई चीज़ में कभी लालच नहीं करना, और न अन्याय अथवा चोरी से किसी की चीज़ लेना। एक लड़की चोरी करके बहुत पछताई थी, उसका वृत्तान्त मैं तुझे सुनाती हूं गुलाबदेई नाम एक लड़की थी; उसकी चाची के घर में एक बेर का पेड़ था चाची उसकी ग़रीब थी, वही बेर बेंचकर जो कुछ पैसे उसको मिलते उसीसे उसका दिन गुज़रान होता था। जब बुढ़िया बाज़ार में जाती तब गुलाबदेई बेर उसके चोरीसे तोड़ २ के खाया करती थी एक दिन जब वह बेर तोड़ रही थी तब चाची उसकी घर आपहुंची। गुलाबदेई ने बेरों को अपने कुरते में छिपालिया,

परन्तु उन बेरोंके साथ जल्दी में एक ततइया चली आती थी, उसने उस्के पेट में काट खाया॥ गुलाबदेई मारे दर्द के चिल्ला उठी; उस्के रोने की आवाज़ सुनतेही मा और चाची उस्की दौड़ आईं और पूछा कि तुझे क्या हुआ उसने कहा कि मुझे ततइयाने काटखाया। उन्होंने कहा कि दिखला कहां काटा अब वह बेरों की चोरी के शरम से दिखला न सकी, तब उन्होंने आकर उस्का कपड़ा उठाया और देखा कि उसमें बेर भरे हुवे हैं पूछाकि यह बेर तू कहांसे लाई वह मारे शरम के जवाब न देसकी; तब उन्होंनेजान लिया कि इसने इस पेड़के बेर चोरी किये हैं। उस्की मा बोली कि तूने जैसा काम कियाथा वैसीही तुझे सज़ा मिली; तू इसी सज़ा के योग्य थी यह ख़बर उस्की सहेलियों में पहुंची; उन्होंने उस्को बेर के नामसे चिढ़ाना शुरू किया गुलाबदेई बड़ी दुःखित और शर्मिन्दा हुई, आयन्देको उसने चोरी से कान खींचे॥

लक्ष्मी जिनकी चोरी पकड़ी जाती है; उनकी तो दुर्दशा होती ही है, परन्तु जिनकी नहीं पकड़ी जाती उनका क्या होताहै?

सरस्वती जो लालची और चोर होते हैं, वे कभी न कभी ज़रूरही पकड़े जाते हैं, और दुःख पाते हैं; और जो न भी पकड़े जावें, और आदमियों के सामने उनके बुरे काम छिपे भी रहें; तोभी परमेश्वर के सामने कोई काम छिपे नहीं रहते; वह सबके मनकी बात जानता है, और बुरे आदमियों को यम रूप होकर परलोक में दण्ड देता है॥

लक्ष्मी परमेश्वर कौन है, कैसे हैं और वे कहां रहते हैं?

सरस्वती यह बातें मैं तुझको पीछे धर्म्म शास्त्र सुनाने के वक़्त समझाऊंगी॥

मुझे प्रतीत होता है कि इस नीति शास्त्र के सुनने से तुझे न्याय और अन्याय उचित और अनुचित का थोड़ासा ज्ञान होगया है; अब तुझे कुछ आख़री उपदेश देकर यह कथा

समाप्त करती हूं ॥

नीति शास्त्र और धर्म्म शास्त्र में तूने जो कुछ सुना है और सुनेगी, उस्से विरुद्ध काम करने को जो कोई आदमी तुझ से कहे तो चाहे वह कैसाही प्यारा हो कभी उस्की बात न मानना, क्योंकि शास्त्र में लिखा है; "सतांमत मति क्रम्य यो ऽसतां वर्त्तते मत्त, शोचन्ते व्यसने तस्य सुहृदो न चिरा दिव" अच्छे लोगों के मतको त्याग करके जो बुरों के मत में चलते हैं; उनके मित्र उनको शीघ्र विपद ग्रस्त देखकर के शोक करते हैं ॥ जो नीति शास्त्र विरुद्ध काम करते हैं, और पाप करते हैं; उनको बुरा जानना चाहिये; ऐसोंकी न सलाह सुनना चाहिये न उनके सङ्ग बैठना चाहिये; परन्तु बन पड़े तो उनको शान्त उपदेश करना चाहिये जो स्त्रियें सती पतिव्रता और धर्म्मवती हैं उन्हींके सङ्ग बैठना चाहिये और उन्हीं से मित्रता करना चाहिये; परन्तु मनसे किसीको छलना नहीं करना। स्त्री अथवा पर पुरुष जो बड़े हैं उनको माता पिता के समान जानना; छोटोंको पुत्र कन्याके समान जानना, और बराबर वालोंको भाई बहेन के न्याईं जानना ॥

और ज्ञानियों के इस वाक्य को याद रखना "यथैवात्मा परस्तद्वत् द्रष्टव्याः शुभमिच्छता, सुखदुःखानि तुल्यानि यथात्मनि तथा परे;" जो लोग अपना भला चाहते हैं उनको चाहिये कि जैसा अपने को देखें ऐसाही पराये को; क्यों कि सुख दुःख जैसा आपको होता है ऐसाही दूसरे को ॥

इति प्रथम भागः